सूत की दुनिया

आशुतोष कुमार

गोपाल कमल की रचना *सूत की अंतरंग कहानी* एक ऐसे विषय के बारे में है जिसका संबंध मानव-जीवन के दैनंदिन पक्ष से है। सूत का हमारे जीवन के हर क्षेत्र— सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक या सांस्कृतिक—में अहम स्थान है। भारत को ग़ुलाम बनाने से पहले अंग्रेज़ों द्वारा किये जाने वाले व्यापार की जिंस हो या युरोप की ओद्योगिक क्रांति के लिए, सूत की हैसियत एक बेहद महत्त्वपूर्ण वस्तु की रही है। गोपाल कमल ने अपनी कृति में सूत की उपयोगिता तथा महत्ता उजागर करते हुए साबित किया है कि यह न केवल लौकिक अपितु अलौकिक जीवन के लिए भी अहम है। 25 अध्यायों के अपने विस्तृत अध्ययन में गोपाल कमल ने सूत के हर पहलू पर विस्तार से प्रकाश डाला है।

पहले अध्याय 'सूत की प्रच्छन्न कथा' में लेखक ने भारतीय सूत पद्धति की महत्ता दर्शाते हुए स्पष्ट किया है कि कैसे युरोपीय औद्योगिक क्रांति में भारतीय सूत ने अहम भूमिका अदा की। उन्होंने इस औद्योगिक क्रांति और भारतीय सूत पर मंथन करते हुए सवाल उठाया है कि क्या भारत उस राह पर नहीं चल सकता, और आज उसके पास किस तरह के विकल्प हैं? (पृ. 31) उन्होंने भारतीय विद्वानों, जैसे प्रसन्न पार्थसारथी, दास गुप्ता, सुब्रह्मण्यम तथा चौधरी के अलावा रियेलो, मचाडो, विलियमसम, ओ'ब्रायन जैसे विदेशी विद्वानों का ज़िक्र करते हुए भारतीय सूत का नया इतिहास लिखने की आवश्यकता पर बल दिया है। कमल का मानना है कि भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना तथा उसके विस्तार को ठीक से समझने के लिए 'सूत की कहानी' को समझना बेहद ज़रूरी है। यह इतिहास सूत की कहानी से ही पता चल सकता है कि अंग्रेज़ी सरकार की नीतियों ने कैसे सूत के आयात-निर्यात को नियंत्रित कर भारतीय सूत उद्योग को बर्बाद कर लंकाशायर की मिलों को पल्लवित किया। इस प्रक्रिया ने ब्रिटिश औद्योगिक क्रांति में अहम भूमिका निभायी।

12_asutosh_review:Layout 1 5/13/2019 2:14 PM Page 193
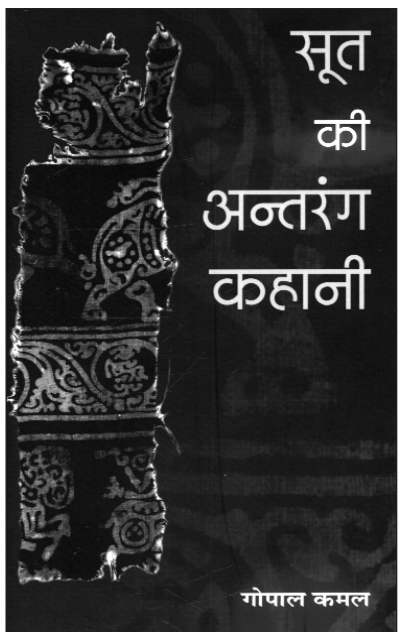
सूत की अन्तरंग कहानी (अध्ययन)
(2016)
गोपाल कमल
भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली
मूल्य : 1300 रुपये; पृष्ठ 840

कमल के अनुसार आख़िर क्या कारण थे कि गाँधी ने खादी तथा चरखा को आज़ादी के आंदोलन का केंद्रीय प्रतीक बनाया? यहाँ वे कहते नज़र आते हैं कि गाँधी और भारत को समझने के लिए हमें सूत को समझना ज़रूरी है। कमल ने हमें सचेत किया है कि आज भारत वि-औद्योगिकीकरण की ओर बढ़ रहा है जिसका मुख्य कारण कपास की खेती की अनदेखी है। उनके अनुसार विदर्भ के किसानों की आत्महत्याएँ हों या कर्नाटक और आंध्र प्रदेश की बदहाली हो, सरकार की कपास विरोधी नीतियाँ हमें और हमारे किसानों को बदहाल कर रही हैं। उन्होंने सरकारी आँकड़ों के हवाले से दिखाया है कि 2011 में खादी का उत्पादन अन्य कपड़ों की तुलना में केवल एक प्रतिशत रहा और वर्ष 2010-2011 में 82 मिलें बंद हुईं जिनसे 29,900 कामगार बेरोज़गार हुए। (पृ. 39) उन्होंने सुझाव दिया है कि कपास के उत्पादन को बढ़ा कर तथा खादी के कपड़ों को बाज़ारोन्मुख बनाकर भारतीय किसानों की बदहाली को कम किया जा सकता है।

इसी अध्याय में कमल ने भारत में सूत के प्राचीन उत्पादन का भी ज़िक्र किया है जिसके प्रमाण भारतीय धर्मग्रंथों में बख़ूबी मिलते हैं। प्राचीन भारत में सूत के व्याकरण का विकास भी दृष्टिगोचर होता है जिसकी अभिव्यक्ति शब्दावलियों में होती है, जैसे कपड़े का थान, नाप के लिए गज्जी आदि। सूत के व्याकरण ने वेदों तथा युगों को भी अपने में समेटा अथवा सूत्रबद्ध किया। महेश्वर सूत्र या पाणिनि के व्याकरण का विकास में भी सूत की उल्लेखनीय भूमिका की गवाही है। ग्यारहवीं सदी तक पाणिनि को सूत्रों से पढ़ने-पढ़ाने की विधि, टोल वाली पद्धति, फिर उसके बाद कौमुदी, लघु कौमुदी आदि ने कपड़े के व्यापार का इतिहास बुना। कमल ने अपने शोध में यह भी दर्शाया है की कैसे कविता का इतिहास भी कपड़े की कला से जुड़ा है। बिम्ब विधान का ज़िक्र कविताओं में अक्सर हुआ है। छायावाद की चित्रभाषा हो या द्विवेदी युग, कवि आलोचकों ने वर्णों के उदय, नामावली, नये वर्णों का मिश्रण और वर्ण परिवर्तन की विवेचनाएँ की हैं। तम्बू में लगे कपडकोट में मुग़ल काल के धात्विक तारों से बुने चित्र आदि सूत की कहानी बयाँ करते हैं।

कमल का अध्ययन हमें यह भी बताता है कि भारतीय सूत न सिर्फ़ भारतीय उपमहाद्वीप, अपितु सुदूर पूर्व के देशों, जैसे जावा, चीन आदि में भी आठवीं सदी में देखा जा सकता है। वहाँ की मूर्तियों को पहनाए गये वस्त्र भारतीय वस्त्र दिखाई पड़ते हैं। कापड़ कला का विकास भी सूत से ही जुड़ा हुआ है। ख़ेत, समझौता और हसीनों की क़ब्र के ऊपर की चादरें भी सूत के इतिहास से जुड़ी हैं। कमल का प्रयास है कि सूत की कहानी में बिम्बों की कहानी, अंतर्यात्रा, शाश्वत भाव की समझ एक ऐसे पक्ष के रूप में उभरे जो की उत्तर व दक्षिण को एक करने जैसा है। उन्होंने सूत की महत्ता को उभारने हेतु अनेक कविताओं का भी ज़िक्र किया है।

दूसरे अध्याय 'व्यापार का व्याकरण' में गोपाल कमल ने सूत के व्यापार से संबंधित कविताओं को उद्धृत किया है। इन कविताओं में सूत की उपयोगिता का ज़िक्र मिलता है जो न केवल भौतिक अपितु धार्मिक उपयोग हेतु भी सूत की महत्ता को स्पष्ट करता है। कविताएँ सूत के व्यापार के फैलाव का ज़िक्र करती हैं।

कौन बने पाणिनि / समेटने कौन लगे

12_asutosh_review:Layout 1 5/13/2019 2:14 PM Page 194

सब सूत वहाँ का,

पश्चिम अफ्रीकी तट से फैला / चीन समंदर तक का व्यापार ...

चरखा! करघा! बुनता! बिनता!! (पृ. 291)

अध्याय तीन, चार और पाँच में कविताओं के माध्यम से सूत तथा उसकी कढ़ाई के वैश्विक विस्तार की चर्चा की गयी है। इसमें इण्डोनेशिया के राजमहलों से ले कर अजंता की गुफ़ाओं तक में भारतीय सूत के प्रयोग को दिखाया गया है। योग्यकर्ता (इण्डोनेशिया का एक शहर) में नौवीं सदी में भारतीय सूती धोती पर लिखी एक कविता की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं :

दस वस्तुएँ उपहारों की / पोलेंगन तीन वर्णित

नवीं सदी गिनाती जाती एक जोड़ी धोती बहुचर्चित

स्वर्णभूमि में उपहारों में / स्वर्ण युग्म में 'युगल' शब्द भी

भारतीय सूती धोती जोड़ी / चले गिने व्यवहार अब्द भी। (पृ. 368)

इन कविताओं में भारतीय सूत के विभिन्न रूपों का ज़िक्र किया गया है जो दर्शाता है कि भारतीय सूत की एक विशाल दुनिया है जिसका हाल के दिनों में ह्रास हुआ है। बर्मा के पेगन मंदिर में लगी पहली सदी की एक पेंटिंग में वैशाली के राजा भारतीय सूत के बने वस्त्र पहने हुए दिखाई देते हैं।

कमल ने छठे अध्याय 'काल का विधान' में सूत रँगने हेतु नील के उत्पादन का ज़िक्र करते हुए बताया है कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी की लगान नीतियों ने कैसे किसानों की कमर तोड़ दी। सूत की रँगाई ने कपड़ों को मनमोहक बनाया। उन्होंने प्राचीन भारतीय रंगसाज़ी पद्धतियों का ज़िक्र करते हुए नील का अध्ययन औषधि डाईज़ और केमिकल सिंथेटिक डाईज़ के समतुल्य किया है ।

अगले अध्यायों में कमल ने सूत से संबंधित मुहावरों व उससे संबंधित कविताओं को प्रस्तुत किया है कि कैसे सूत मध्यकालीन भारत में कबीर और दादू के कातने-बिनने-बुनने-इकट्ठे करने की वस्तु बनती है। अंतिम अध्याय में कमल ने 'बाज़ार में सूत' पर चर्चा की है। इसमें कमल ने बाज़ार, साम्राज्य, नव-साम्राज्यवाद के बढ़ते चरण, क्रय-विक्रय के नये प्रतिमानों को समझने का प्रयास किया है। उन्होंने उदीयमान मैनेजमेंट स्टडीज़ में कपड़े की बेहतरी की आशा व्यक्त की है। उन्होंने बाजार में सूत की मज़बूती के उद्धरण दे कर तथा उसके बखान द्वारा भी अपना तर्क स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

गोपाल कमल की कृति एक आवश्यक शोध की ओर संकेत करती है। हाल ही में स्वेन बेकर्ट ने *सूत का साम्राज्य* (*एम्पायर ऑफ़ कॉटन*) पुस्तक प्रकाशित की है जो दिखाती है कि सूत का उत्पादन कैसे पूँजीवादी पद्धति के तहत किया जाता रहा जिसमें बँधुआ मज़दूरों (या दास मज़दूरों) की अहम भूमिका रही। कमल की रचना में सूत के प्रयोग, उसके फैलाव, उसके उपयोग तथा नव-साम्राज्यवादी विस्तार में उसके योगदान की चर्चा मिलती है, लेकिन सूत के उत्पादन और उसकी प्रक्रिया की चर्चा न के बराबर है। कमल के शोध-प्रविधि तथा पाठ जटिल और छितराए हुए हैं जिससे पाठकों को उनकी बात समझने में कुछ परेशानी होती है। लेखन-कला को और सुसंगठित किया जा सकता था। कुल मिला कर *सूत की अंतरंग कहानी* एक पठनीय पुस्तक ज़रूर है जो सूत पर एक और बेहतर ऐतिहासिक शोध की आवश्यकता पर बल देती है।

इस रचना की एक उल्लेखनीय कमज़ोरी भाषा और व्याकरण की अशुद्धियाँ भी हैं। ऐसा लगता है कि लेखक ने पुस्तक की अभिव्यक्तियों को समझने की ज़िम्मेदारी पाठक पर ही छोड़ दी है। कृति के मूल-तत्त्व की बेहद आम बोलचाल की भाषा में प्रस्तुति ने पाठक का काम सरल करने के बजाय जटिल बना दिया है। इसी तरह उद्धृत कविताओं के स्रोत की जानकारी भी कम ही मिल पाती है। कविताओं की व्याख्या का अभाव उनके संदर्भ को समझ पाना दुरूह कर देता है। ये ख़ामियाँ नहीं होतीं तो पुस्तक और भी अहम हो सकती थी।